

आनंद लेशी ॥ पना वं भ दत प्र
साद ॥ श्रीगुरुदेवदता यन्मः



श्रीगुरुदेवराजमाहाराजप्रसं

आनंद लै दी

श्रीगुरुजनमाः ॐ नमो जी सकल आव धृता
ॐ ॐ नमो जी सकल आव धृता ॥ ॐ नमो
जी पशु रनी रगुना ॥ ॐ नमो जी सकल सुसा
ची नी धाना ॥ जग जी वना मु क वी कु ॥ जा ॥ १ ॥
ॐ नमो जी सकल व्यापका ॥ ॐ नमो जी आ
नदा ची या नी ज सु सा ॥ आनदा आनंद सु सा
नी ज सु का ॥ त्रि लोका प्रत ह्ये ॥ २ ॥ ॐ नमो
जी आव्या सा प्र ब्र सा ॥ ॐ नमो सकल सुका

ची या नी धामा ॥ ॐ नमो ध क्ती ची पा कु
पद्रुमा ॥ त्रि ज तु प मा आनी कनी ही ॥ ३ ॥ ॐ न
मो जी आ दी प्र सा आ दी दे वता ॥ ॐ नमो
उसती प्र क यरि र ही ता ॥ पा हा ता त स क ल
यो जनी ता ॥ सक ल भु ता स ता लु श्री ॥ ४ ॥
ॐ नमो जी इ न सा ग ना ॥ ॐ नमो

आनदलेती॥

त्री मुती आवतारा॥ ॐ नमो जीमो ध्या
यी यानी ज थारा॥ विस्यं बं रातुं मो॥
कसे नी ज स्यप पा हा ता द्री वी॥ नी ज आ
नंद न समा वसु वी॥ कटली जे न्य र्पा ना
ची गाठी॥ नर्धे ये पोटी मी जा हा लो १५
दु र धर्मा पाते मोठी॥ सं च र ली होती

माझी या पोटी॥ हे ता क शी या क पा द्री वी
कु टा कु टी प वा ली ॥ ७ ॥ क से स्य पा हा ता
का ही॥ बंधा मो धने दो न्ही ना ही॥ व्या कृत
स क वा दे ही॥ ७ नानं तं द डो ही मी तर ग ॥ ८
बंध म्मु की ची का हा नी॥ ऐ की ली जे वी स्य
प नी॥ जा गृ ती मा झी य वौ नी॥ सां च माने
को न ते थ ॥ ९ ॥ स्वर्ग न कं दो न्ही सब ॥ १० ॥
हि सा ना चा ७ रा नु वा द ॥ सद्गु त ह पे चा सा

आनंद लक्ष्मी
ली था बोध ॥ जाहल सब चेतने ॥ १० ॥ सगु
आनी रगुन ॥ हे सद्दा ये लाघव पन ॥ जेथ
सद्दा जाहला सव्ये ॥ गुना गुन उरले कोठे ॥ ११ ॥
तुशी वीध माया से सी ॥ आनंत ब्रह्मांडा
शाली रची ती ॥ कशी पची या मृती ॥ जैसी
सतती वांजे ची ॥ १२ ॥ जैसा क्लृपने चाई
स्तार ॥ हृदई कनी तो आ पार नर ॥ जाहता
नदी से सा चारु ॥ तैसा वी च्या र माया चा

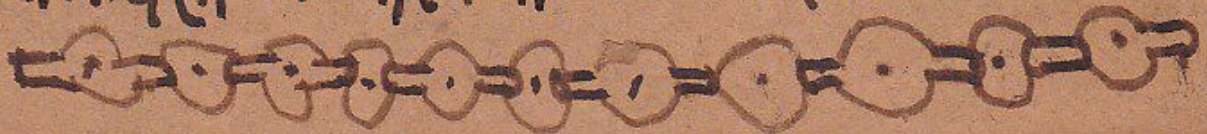
१३ ॥ आहें सी जे तु श्या स्वत पी वा स
ती ॥ तैसा सी चकळ ली माया ची स्थिती
आनी सेंकळ मी ध्या ल दे खती ॥ आ ज्ञान
भोती तया नाही ॥ १४ ॥ मृक्ती चा वळ सा
जेथ ॥ आ ज्ञानी दशा तेथ ॥ बरुनी द्रीत्त
व स न ते ॥ तैसा भोती का सा पड ये ला
आ से ॥ १५ ॥ जैसा सी तु शी ह्या शाली ॥ तया
ची सकळ भोती नी रस ली ॥ आनी क ॥

लपना वी रो न गो ली ॥ वी ती बु ड ली तु सी
 या स्व व रूपी ॥ १६ ॥ प र्य स लो ग लो लो ह म ते
 दू री गो ली का की मा ते ॥ श्रे ष्ठ व र्णा नी ले
 नी या ते ॥ प री आ र्ज का रा ते न मु क्ते ॥ १७
 पु र्व क्र म जे जे घ ड ले ॥ ते ने ते ना व पा व ले
 प री ते लो हो प ना सी प्र क ले ॥ न प्रो ड ता जा
 हा ले सु व र्ण ॥ १८ ॥ तै सा स द्ग स ध पा वं त ॥
 नी र सी ले र्पा ती का की मा त ॥ द वो नी शान
 आ शानां त ॥ नी ज स्र खा त मी क वी ले ॥ १९

प री या दे द्या ची या मा था ॥ वा हे क र्म रे स्यो
 ची स ता ॥ ते ने न च क्ते जी लो ॥ स्र ख दु ख
 सं ची त भो गा वे ॥ २० ॥ द्यो लु नी आ शा ची
 फा सा ॥ शि ड वी ना ना दे शा ॥ हो पु टी क री नी दे
 आ शा ॥ सं ची त ते से भो गा वे ॥ २१ ॥ पु र्व क र्म
 जे जे घ ड ले ॥ ते ते आ र्ज का रा त आ ट ले ॥
 ते ना व प ना सी प्र क ले ॥ के व ल जा हा ले सु व
 २२ ॥ द्रु षां त ॥ जै सा वृ षे धे दी ली पा र्म क ॥
 ह ह ह ह ह ह

आरद्रतान लुटे-ची ता को ^{आनद लेनी} के ॥ आंगी आ सोनी ॥
 आलपको ॥ मग केवका ष हो ये ॥ २३ ॥ पत्र आ
 नी पुष्प फळ ॥ सहित वाळला सुळ ॥ आनी वृ
 क्षा चै सुट ले सुळ ॥ मग आंगी संगे केवक थं
 सु हो ये ॥ तै सी सु स ल पा हो ये ॥ २४ ॥ तो डी ले वी
 वे का चै घा ये ॥ दे हे वृ क्षे प ड ले पा हे ॥ आद्रता ना हे
 सं ची ता ची ॥ २५ ॥ भं सु सा ली या नं त रे ॥ वृ क्षा सी
 व व ना रु रे ॥ तै सा दे हे आ नु भनी वी रे ॥ पु डे वी रे
 जे न्म म नी ॥ २६ ॥ तै से दे ही पा व ती या लं यो ॥ २७

पुर्वे क्रम सहज ची जा य ॥ सं ची त न्गु रे स
 रे ची हो पे ॥ सु न्य त प दे से पा हो ॥ २७ ॥ पुर्वे क्रम
 ची पे सी प सी ॥ गुरु भं नु न घे आ प ना व सी ॥
 रा हु नी आ यं दा क्षी त सी ॥ सा क्षा त वे कारी व्र तं त
 से ॥ २८ ॥ तै से ज का मा जी व्र प त्र ॥ ज नी आ प्रो
 सो नी आ ली प ॥ तै से प्र कृ वं त तां त ॥ सु ख
 भोगी स्या हा नं दे ॥ २९ ॥ भव न्म मा ते नी सी लो ॥
 आ नी दे ही य म क के ले ॥ स्व रू प मी क वी ले



आनंद लैरी

आपुली या ॥ ३० ॥ तुझी पासपाया
 आनू थाव ॥ जानती संत महत ध्याऊ काव
 इसरोनी यादी ही भाव ॥ भोगीती वै भवपेदे
 सा ॥ ३१ ॥ जे आमुता चे सागरी ॥ आहर्नी सी
 जो की डाकरी ॥ तो जे नम मनी चे भैना धरी
 हे कै से पश घडो सके ॥ ३२ ॥ जे थ जे नम मनी
 जाला वावो ॥ ते थ ब धमू रूपना कै चाढा
 वै ॥ जी वगी जो नी आपु लागु गवो ॥ वी सर ला
 पा हो दु जे पन ॥ ३३ ॥ ये सेतु सेरु पे ची कनी

भव थ ये नी र सी लै तत धरे नी ॥ नी द्रु ति
 वसना वे स्ये प्री ॥ ल्या उ दु सुव ध के लै ॥ ३४
 पुतशात मप चे वा धर र ॥ जे भावे जप ती नी
 र ॥ ते थ कै ध्र म संचार ॥ न च ले व्या पर
 पं चे थ ता चा ॥ ३५ ॥ सह रु चै र नी ज यां भा
 वो ॥ ते सी बंध मू कृ ता सा ला वा वो ॥ ते सी
 का र्ज वी सर ला पा हो ॥ वो ॥ ते या सी ढी व ब्र
 ह्म प दी ॥ ३६ ॥ भावार्थी चे गों डे नी ज ॥ ते सी
 बंध ता कै से घडे ॥ य म पुरी व स प डे ॥ ३७

आनंदलैरी

लकनीपडेप्रतनाथ ॥ ३७ ॥ जरीपंतगधरुही
वडवानेकासी ॥ कीद्रुसीगीकीसेसासी ॥ जे
साखोद्योतगीकीजेरईबीबासी ॥ तैसागुरु
भ-रुासीबाधता ॥ ३८ ॥ जैसावायेसमुध्ये
करीखगपतीसी ॥ जैसेपीपुलीकासपसा
रसुसी ॥ तैसेकुकुटगीकीलाडासी ॥ तैसा
गुरुभरुासीबाधता ॥ ३९ ॥ जैसेबीत्रीचीपा
हुतासने ॥ दधिहोतीलावने ॥ जैसेरजुंरज
पाचीयाभेजे ॥ मर्नपावनेहदोंत ॥ ४०

ब्र

कीमक्षीकीचीनीधडके ॥ माहागीरीपडो
सके ॥ कीप्रीताचीयाधाके ॥ सडपुसकेलाका
काका ४१ ॥ कीवाजेचीयासुते ॥ रनीजीकीजे
इद्रते ॥ कीवाकासवाचीयार्धते ॥ कुंभ-ऊन
तेतरजहोये ॥ ४२ ॥ हेहीस्यरीवीछाघडे ॥ जन्मम
नाचेफीटलेकोडे ॥ तुटलेबीराडेमापाचे
४३ ॥ जैमापा-त्रीभवनयेली ॥ सकळभुताते
प्रस्यली ॥ नीमीशेमात्रबलाडरचीली ॥
श्रीकीलीसईशे ॥ ४४ ॥ त्यामाथापारु ॥ ४५

आनंद ले-ही

नैन ती देव हारी हारु ॥ हा ही माई कवे व्हा रु ॥ ४५ ॥ ध
 त्री मृती ची जे सता ॥ ते म्हा मा पे ची प्र व्रत तामा
 ये ची न का पे कता ॥ ते ही स्र व न घडे ॥ ४६ ॥ आ
 गा ध मा पे ची कनी ॥ र-यो नी त्या ना ना वी धा
 नी ॥ करे नी आव ची कनी ॥ आरु घे प ने व ते ते
 ४७ ॥ जे स्य र पी ई छ्या झा ली ॥ ते मा या न व पा नी
 सक म्भु ता प्र स व ली ॥ पृष्ठी नी ॥ मी नी
 प ल म त्रे ॥ ४८ ॥ सी व आ न नी जी व प न ॥ तै या
 सी जे लाई ले सु र्ज ॥ स्र स्व दु स्व भोग दा स न ॥ ४९

करो नी आप न नी रा नी ॥ ४९ ॥ ये सी ते मा या स
 ब क ॥ ये हो ड र ची जे डा वा व ॥ ते म्हा प्र का पु
 डे के वु क ॥ मी ध्या म्हा जे के हा रु न डे ले ॥ ५०
 सि व र ची ना रा ये न ॥ आ नी सां धु सं त यो गी
 जे ने ॥ हे स्य र पी झा ले नी म म्हा ॥ त्या ते मा या व
 द न न दा वे ॥ ५१ ॥ जे थ जा ना चा स्र का वृ ते
 थ मा या चा गो द वृ ॥ जे थ जा ना चा क ने व व
 ते थ वी के वृ मा पे चा ॥ ५२ ॥ जरी ल ना ल मा पे
 यो पी टा वृ ॥ तरी का दे हे धरी ले स्थ क ॥ ऐ से
 स न ती ले के व क आ जा न स्र क जा ना वे ॥ ५३

आनंद ^{के} ^{रु}
माया सी नाही स्वता ये लन ॥ ती सी चाळी
ताना रायन ॥ माया पडवें आं ड करुन ॥ भू
नाते आप न चेष्ट वी ॥ ५४ ॥ दुष्टांत ॥ जैसी
दुष्टा या मड पासीत सी ॥ एक ला बैसोनी सु
त्रधा सी ॥ व द्र ला वो नी मा जा री ॥ प्र भा
करी दी पा ची ॥ ५५ ॥ नाना आ चेतन पुतळी
या ॥ धई धै ना च वी ॥ हा व भाव राग
नी या ॥ जन भु त वा व था से वत ॥ ५६ ॥ एक
यका सी मा सीते ॥ राप न ची शे द्ध आं नी क

रीते ॥ काय जाह लै ल न नी पु स तो ॥ आ
नी कह स तो आप न ची ॥ ५७ ॥ भाड न भाड
ते कर वी ॥ माई पा टी व्या घ्र ला वी ॥ पै शा पु
तळी या से व नी ॥ आनी क मान वी त्या ते ॥ ५८ ॥
आनंत पुतळी या दा वीत ॥ सका र स्व द्ध्या क
रीत ॥ आ ज्ञा ते सां च दी सत ॥ आ सो नी जी त ना
मै ले ॥ ५९ ॥ दा स्र वी ना ना रु स्व दु स्व ॥ हा हे ये को
हा ते दो शे ॥ देख ॥ ये के वी न ना हो दु जो ॥ पै क ॥
पप पु न्यो क व ना सी ॥ ६० ॥ पै सा भंग वंत ली

बाईन लेरी

क्या आवतारी ॥ चीदाकासे मंडपा भीतरि
मायापडकला वीनी माझारी ॥ प्रभाकररी
रुपाची ॥ नानायाती ॥ ६१ ॥ नानावने ॥ नाना
कर्मपापुन्येसुखदुःखदीशोगदोरुने ॥ को
नीव्यापुनीराका ॥ ६२ ॥ तोजैसेचाळवीत
तैसेतैभूतचेळवीत ॥ सर्वकर्ताभंगवंत
पापपुन्येकनामातथेपापपुन्येहेबोलेन
जैसीतामाजीलेबुझने ॥ तेथनाहीसाचप
से

नें ॥ ब्रैथाथेनेवनचेरा ॥ ६४ ॥ तैशेतेआ
ज्ञानजन ॥ तैसीदीसेपापपुन्ये ॥ जेजीवन
मुक्तसंज्ञान ॥ त्यासीत्रीभुनमुक्तीदीसे ॥ ६५
त्यासीमायामीथेकनलीपाहे ॥ तैदीहीचआ
तावीदेहे ॥ त्याजेन्ममर्नाचेथथनाही ॥ सची
दानंदडोहीकीडत ॥ ६६ ॥ जैथासीनाहीमज्ञा
नत्यासीआसेबंधन ॥ नानादुखशोगदा
रुन ॥ जेनममर्नशेगीतीते ॥ ६७ ॥ जेसुद्ध

आनंद ले ही

जिसका ये वांकीत ॥ त्या सीदे हे माहादुख भे ॥
लेत ॥ स्वसपी होतुनी थारात ॥ सुख भोगी श्याने
दे ॥ ६० ॥ एक दे ही वा सोनी पहि ॥ आत्म शा
नने नती का ही ॥ संचित भोग कदा स ही ना ॥ ६१ ॥
हृषांत ॥ जैसे द्रव्या ची था गुन ॥ एक वी सचे
वोनी भं द्येन ॥ येक उप भोग भोगन ॥ एक
धर्म दान करी ती ॥ ७० ॥ ते थ द्रव्यां स ना ही
स मन ॥ आपुला ले संचि भोग वी ॥ ६२

११

ते से दे हो ची था गुन ॥ नंधं मु रूपन लागले
भोग ॥ ७१ ॥ जैसे काषा ची पुतळी ॥ सर्वे दे हे द्री
सी नी छं मी ली ॥ परी चा की ली या वा ची नी चा
की ॥ प्रात परु वे ॥ ७२ ॥ चा नी ता बे सो नी वांत
री ॥ वडी री द्री या ची दो सी ॥ मग प्रवे ते वा प्रा
सुत्रा वा नु क्रमे ॥ ते देख ॥ ७३ ॥ ते से दे हा वा
चे तन ॥ ते या ते चा व नी त से मन ॥ सर्वे इंद्रिये
था चे वा ध्यान ॥ हा स्या मी जान ॥ इंद्रिया चा ७४

जननं दुर्लभं

पाप पुन्ये ची लक पना ॥ संकल्प वी कल्प दुष्ट
ती मना ॥ वी सरो नी म ज्ञाना ॥ जे नम मर्न भोगी
ती ॥ ७५ ॥ जै शी संद्रुत ह्य फा हो ये ॥ त्या चै मी पन
वी रो नी जो ये ॥ संकल्प वी कल्प नर रोटा वे १२
मी रा सहो प मो ध्या ची ॥ ७६ ॥ यक कुरु स थक
ते नी दी ती ॥ कुरु स नी जे का लन ती ॥ जे कुरु ते शे
वी ती ॥ त्या प्रा सी का य जा ती ॥ ७७ ॥ कुरु स थक
ला ध ले म्भ स्व ॥ ते ने न ती ज्ञान्या म्भ स्व ॥ इ सर्व
सु म्भ मा त ले दे स्व ॥ जे नम मर्न दु स्व भोगी ती ॥ ७८

दुष्टात ॥ जै से ना पु से का सी प द्नी नी ॥ की उल्
का सी दी न म्भ नी ॥ की ना सी का सी मु स्व द्र प
ने ॥ पा हा ता नै नी सु स्व का ये ॥ ७९ ॥ की स्या न
सी से ज पु ष मा ची ॥ बंद रा गो डी की ते ना ची
की रो गी या आ न प्र म त ची कै वी ॥ हे क दा ची
न छे डे ॥ ८० ॥ की वा गं भ आं धा सी ॥ सु र्भ न
भा से ॥ शो शी सी ॥ की आ मं ग क श्ट का सी मी
सु न भो जे न कै सी या ॥ ८१ ॥ मु र्खी सी
च्य तु स ता ॥ से द्वा ची का ये ॥ की ले सा

होकी लपुन्य वक्ता ॥ ^{आमंद ले सी} श्री कुरु टणा की तीथा
 हे सर्व थान घडे ॥ ८२ ॥ तै से आ भं का सी आनी
 कुरु भ का सी ॥ संग घड ल क ल्मा ते सी ॥ अ
 नंत जे न्मा ये पु ने फ ले त्या सी ॥ तरी प्रा सी ती
 श्री गुरु भ जनी ॥ ८३ ॥ ये से मु र्वा सी भ जे
 न ॥ सद्गुरु ये ॥ हे सर्व थान घ डे जान ॥ ते जे
 न्म मनी ये आ धी शान ॥ स ची त स द न पा या ये
 जे जी नी वा द शान होती ॥ ते ची पा व ती गुरु भ
 भ सी ॥ तै नी ज स स थो गी ती ॥ ८४ ॥ आ आ ती

जेड मुका ॥ ८५ ॥ श्रु तेन माना वे खेद ॥ म्या आ
 ल्या मना सी के ला बो धु ॥ भा वे १० जा व प्रेम
 नंदु ॥ कंदु ॥ मो क्षे पर पा वा वै या ॥ ८६ ॥ सो से
 न ध र वें प्र पं च्या ये ॥ स ची हो त सं वा पा चै
 भ्र ती दा ट ले बहु सी धु ये ॥ जा न्म मनी ये त्या
 दु ख ॥ ८७ ॥ प्र पं ची ज री स स ख जो डे ॥ तरी का
 सी वी ती गी री कडे ॥ राज टा को नी गे ले थो ॥
 ते का र्हे डे ल्ना वी ॥ ८८ ॥ श्री गुरु गो स्व वा थु

आनंदनेरी

बोलती ॥ नव नव कोटी भुपती ॥ ईराचीना
हीगुती ॥ योगाप्रतीनीद्याले ॥ ७९ ॥ भवसीधु
चीयाद्येही ॥ वीरुपाचागळघातलापाह
कोळलंधीतीदेशदहीजीवसर्वहीभरीती ॥ १०
जोसंहरसीसर्जजाये ॥ त्यासीकोळकनीने
काये ॥ लोकाकाचाहीकाळहोये ॥ ऐशेवेदशा
स्रबोलती ॥ ११ ॥ नलगेयोगयागसाधन
नलागेतीथआपहृयन ॥ नलागेवैरागतप
दान ॥ यकगुतभजनकरवे ॥ १२ ॥ वानक

मकेलीथापहे ॥ राजकीकास्वर्गप्राप्त
ये ॥ राज्यामधेनकेडाहे ॥ ऐसेबोलतीशा
स्रवेद ॥ १३ ॥ स्वर्गीकाथसागावेस्रस्र ॥ पुने
सरलीथालोटीतीदेश ॥ प्रागुतीपाहावेवैश्र
त्येभोके ॥ स्वर्गनकेथोगावेया ॥ १४ ॥ नके
सनीजेग्रभवास ॥ नकेपचावेनवमासन
नादस्रहोतीजीवास ॥ त्याहीवीसेशदस्रका
ये ॥ १५ ॥ जेमुत्याचंफुळतुटे ॥ जेन्मर्मनाये
स्रतफाटे ॥ पापपुन्याचीवाटसुटे ॥ धर्न

उठे का का ये ॥१६॥ ^{बाबुदलेनी} पे सो हो ज या उपा वो ॥ ५ ॥
वे भजा वा संदुत रा वो ॥ जन्म मना चा मोरी
लाटा वो ॥ श्री के जीव सी वा सी ॥ १७ ॥ ते थकी
नाही नाही जीवने ला ॥ आनी स्व रूपी श्री क
वी ला ॥ ते थी चा ते थे श्री क वी ला ॥ उगव १५
दा वी ला जी वा सी ॥ १८ ॥ जीव उपा पु ला ग
उपा हे ॥ ई द्री या सहीत ली न हो थे ॥ ते थका
करी ल का ये ॥ जन्म म न पा ये सुंदती १९
हु संत ॥ जैसे पु व प ती ये वा के ॥ आनी वार

आ न्ये के ला मंगते मा ते पु डी जा गुनी बैस
ले ॥ मग का ये चा ले क व ना ॥ ये ॥ २० ॥ जैसे
जीव स्व रूपी आ से ॥ नाना क्रम करी बहु व से
से ॥ ते स्व रूपी था जा ले स र से ॥ ते थका
का सी री पा वा के चा ॥ २१ ॥ थ रूप आ स्व ड
दं ड ये मान ॥ सर्वा ठा ई प री पु न ॥ ते थके
चा जी वा सी जी व प न ॥ सने सो न ये क जा
हा ला ॥ २२ ॥ हु संत ॥ जैसे सा ग री हु न ल व
जाना ॥ जका पा सो नी नी मो न ॥

भौजवाजा लेकटीन ॥ होउनी थीन्त भी
आनाही ॥ ३ ॥ तेची जका माजेघालीता ॥
जकीची होयेतवता ॥ जेप्रतुन येईलहाता
हेसर्वथानघडे ॥ ४ ॥ यालागीसंहुत्तये
जन ॥ सद्गुरुपीजाये मीळून ॥ आवतारुदी
कडासु ॥ सद्गुरुसीसेरननीघालोपा ॥ राम
मनामकरीतीघोसे ॥ तेनेतुटतीबहुबंध
कासे ॥ तोहीसेने श्रीवचीषादा श्री ॥ ५ ॥

१६

सद्गुरुभक्तीसीसादारा ॥ ६ ॥ द्रष्टांत ॥ पुनर्व
क्लानदक्षणाथा ॥ तोहीजनकीतोमरुभक्त
द्रुवासमस्तचीसेवाकरीते ॥ नीत्यामुक्ती
यालागी ॥ ७ ॥ ब्रह्मपदाचेआधेकारीसद्गुरु
रुसेवेसीनीधीरी ॥ सरनमत्रेदुरीकरी
तोश्रीहारीगुरुभक्त ॥ ८ ॥ जैसीकासेवाची
उत्पत्ती ॥ ग्रंथंभांधासीसांतती ॥ तेचवृ
कीनवाडवीती ॥ हेकलांतीनघडे ॥ ९ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

तैसे सद्गुरु वीन पावले मोक्षार्थे साधन ॥ १७
तथैव वा वीथिमान् ॥ ऐकी लै जानको हेतु १७
नामीयास स्वाभं गवंता सी ॥ भगवंत प्रतपुने
त्यापी सी ॥ प्रसी सी कवीना मर्क्या सी ॥ सुकु
वीन पावै सुखा सी न पावै तु ॥ ११ ॥ ते मानो नी ११
गवंत चन ॥ नीचा लो नो मया सद्गुरु सी से
न ॥ रूप जानो नी या नी कुनि सगुन सद्गुरु
रुजा ला ॥ १२ ॥ तेने की सुजा थके ला गुरु ॥
जाथा चे उपनव सै चरु ॥ तेने के ला सा धनेत

१७

कारु ॥ नी जसुखा चैघ रूपवला ॥ १३ ॥ ये
के सद्गुरु चै थं जना ॥ तुठती जीवा चै बंध
न ॥ नी जसुजा नी ११ वीकृजन ॥ त्या सीव
चैन मानी ले ॥ ४ ॥ जै थाव चैना मानी ती
भा के सद्गुरु देव प्रजती ॥ त्या च्यौघरी च्या
री मुक्ती ॥ दाशे ला करी ती आन्या श ॥ १५ ॥ १५
बहुत जो लुनी का ये ॥ जया चै पद सी पुर्व
पुने हो ये ॥ तो च्यौ सद्गुरु सी शेने जाये ॥ १६

आनंद श्रेणी

मुक्ती लागी हे ची दे ही ॥ १६ ॥ ची दे ही हे चडो का
भोगी जे मुक्ती चा सो को ज ॥ वैशा को ही थ
नी रा को ॥ तो ची जी हा को ते थी चा ॥ १७ ॥ त्प
ते दे स्वता चिं दी वी ॥ मुक्ती लागे उठा रु टी ॥ मु
या सी पडली गाठी ॥ आनंद श्रेणी न क्म ये ॥ १८ ॥
तो म्या दे र्वी ला पुरु सो त म ॥ दे स्वता ची गी ला
बुहे ग्रं म ॥ सु स्व जात ले आनंद उप म ॥ पा व
लो धा म मो धा ये ॥ १९ ॥ मस्त की लागत ज
भा चा कर ॥ न मो डता श्रेणी चार व्हा रु ॥

१८
१९

सर्व जाले सुने का त ते ज आ बंदी ठ लें ॥ ने
न ती हारी हा ता ॥ ये द रा ह नी म्ये न्ये का रु ॥ आ ती
वी चा रु प ड ला आं से ॥ २१ ॥ त्या तु व्हा प्र व न
वे ॥ क्व ने उप म्ये सी आ ना वे ॥ या वी न वृ ज दे स
त री सां गा वे सा श्रे का र ॥ २२ ॥ जो नी गु नी रा का
त नी रुप म्या नी रा धा रु ॥ प्र ब्र ह्म नी रा का र
ई वं ई धं व स आ व्हा क्तो ॥ २३ ॥ आ स्रं ड
ते ज सं दो दी त उर ती र्थी ती प्र क थ र ही त
आं पु नी सर्वा सी आ ली स ॥ या वी न री ता

२०
२१
२२
२३

अनंद लेरी

ठावनाही ॥२४॥ जेपुसपर जेव सुप रासप
तेसगुननीर गुनाचेगुदर ॥ याचोवेदसीन
कणेपार ॥ सेबदाचोवी च्यार सुट लातेथ २५
मनेजयातदेखीजे ॥ त्यातयेद्ववासीनीजे १९
जेथेमनपनसुकीजे ॥ तेसद्ववोलीजे ॥ २०
कैसेपरी ॥ २१ ॥ मजसेकातेचाकवीत ॥ ते
थठावनाहीमनात ॥ मगगुरीकैसेद्रोया
त ॥ देखतासुतपातपावेला ॥ २२ ॥ धुरीसनाल
थेतपनीराकारु ॥ तसीहाकोठोनीजाहला

११

१९

वीस्तारु ॥ सेद्वईसेद्वचाई च्यारु ॥ श्रोते
सादरुपरीसावे ॥ २३ ॥ जरीउपसाहतेआसावे
तरीसातेकवनयेध्यावे ॥ त्याचेसुबदु
जेआसावे ॥ २४ ॥ मोवेसाहीते ॥ २५ ॥ पुरी
वेलेतोआमंपमती ॥ भावेपरीसावेसुज
मंश्रुती ॥ रवीकीनीपुठेकाडवती ॥ तेसे
मतीवोलेतो ॥ २६ ॥ जेसेपाहातवटबीजसी
सुधेमेहनदीसेद्रीसीसी ॥ नीराकारुआजे
त्यासी ॥ ठावधुमासीतेथकेचा ॥ २७ ॥

उत्पन्नदले श्री

बीजा मा जी आता उा कुं क॥ बीजी होता बीजा का
 का तो सु धे म नी द्या ला बाहे सु॥ मग वारो वार
 वाढ ला वें धे ॥ उर का व पुत्र फ फ ल प ने
 बी मग बी जा होती बीजा का सु॥ तो ची महा वी
 स्त्री सु॥ मग प सर ला स्य वी द्ये ॥ ३३ ॥ नोही २०
 ल नीता वी स्तार ला ॥ वाहे स्तानीता नाही द्ये
 ला ॥ बीजा मा झी होता सं च ला ॥ तो वी स्तार
 ला सगुन वे ॥ ३४ ॥ तै से नी र गु न स्य र पा
 मा शा री ॥ वं नंत ब्र ह्मा ज ची सरो व री ॥

श्रु पा का र उा सती उां त री ॥ ते ची वा
 हे री नी द्या ला ३५ ॥ ते व्या पी ले वृ ध्वा सी ॥ तै
 से नी र गु न सगुना सी ॥ स्ये उा नी ले धी न द्ये
 सी ॥ तै से क्का सी उा ल का र ॥ ३६ ॥ मा या
 स्वप्नी उा थां होती ॥ र्दु ग गु न उा ली व्या ती
 सर्व गु ना ते प्र स वी ली रा सी ॥ करी मृ ती री
 गु ना ची ॥ ३७ ॥ के नी ना ना र च ना ते ॥ स्य स्य
 व्या पी ले र्वा ते ॥ जै सु व नि उा लं का रा ते ॥
 व्या पु नी व्या त रा ही ले ॥ ३८ ॥ तै सा स्व स पा चा

नी आनंद ले सी
 वी सारु ॥ हो बुनी री का सा थो सारु ॥ सा चानेन
 ती पारु ॥ ब्रह्मा हरि हरि स ये डा व ले ॥ ७५ ॥ त
 याते मन च दे सी जे ॥ र स वी ने गो डी च दे सी जे ॥
 भोगे वी न स स्व भोगी जे ॥ ते व क सी जे त या
 ते ॥ ७६ ॥ आता थो लने खु ठ ले ॥ संदा चो क
 थ राही ले ॥ द्री पी चो दे क से न र ले ॥ ते ही
 वी रा ले से व टी ॥ ७७ ॥ संदूस चो नी ज दा स
 ते ची पा थो स का स ॥ प री स ता का न य रा
 स ॥ जै सा प री या सी न क ले ग र स ॥ ७८ ॥

२१

सक का सी स थ गी न्म न ॥ तु स्ती जा वे
 स दु स सी जे न ॥ च क वा वे ज न्म न ॥ नी
 मी र आ थो ना थो दा वे ॥ ७९ ॥ मन आ स ता
 आ नं द भी त री ॥ ते थ रु ठ ली आ नं द ले
 हे री ॥ ल र्क नी वं दी ली वै स री ॥ आ नं द ले
 हे री था ना व ॥ ८० ॥ थ का ज ना र्द नी थे क ना थ
 थ क ल नी ता वी स थं री त ॥ तो हो बु नी क
 पा वं त ॥ आ नं द ले हे री व द वी ली ॥ ८१ ॥ प
 ता ग र थ म्मा आ नं द ले हे री ॥ स्या त व द वी ले वे

वैश्वरी ॥ वैश्वेजानावेद्गर्दया उमानंतरी ॥ श्री
शुभो वादरीपरीसावे ॥ ४६ ॥ वैसी उमा
नंदलैरी फळदा येऊ ॥ सीधंपुरुसा ३२
येवचन देख ॥ संतसत जानती वीकेक
सहभावी श्रोते जन ॥ ४७ ॥ इती श्री उमानंद
लेहीरी ॥ संपुर्वस्तु ॥ श्री गुरु वार्पन मंसु

